संत श्री आशारामजी आश्रम द्वारा प्रकाशित

ऋषि प्रसाद

मूल्य : ₹ ७ भाषा : हिन्दी
प्रकाशन दिनांक : १ अगस्त २०२५
वर्ष : ३५ अंक : २ (निरंतर अंक : ३९२)
पृष्ठ संख्या : ३६ (आवरण पृष्ठ सहित)

आत्मसाक्षात्कार विशेष
पर्व : २३ सितम्बर
पढ़ें पृष्ठ ११

गीताज्ञान पाते हुए अर्जुन

भगवत्पाद साँईं श्री लीलाशाहजी महाराज से ब्रह्मबोध पाते संत श्री आशारामजी बापू

तत्त्व-उपदेश सुनते हुए हनुमानजी

जिन्होंने पकड़ी सद्गुरु की बात, वे हो गये ब्रह्म साक्षात्...

पढ़ें पृष्ठ : ४

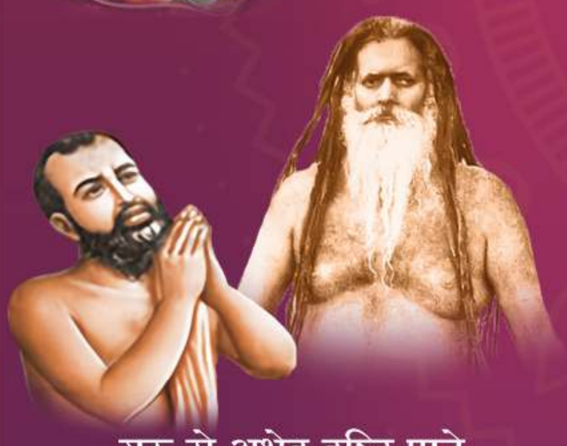

गुरु से अभेद दृष्टि पाते रामकृष्ण परमहंसजी

सत्र २०२४-२५ की बोर्ड-परीक्षाओं के उत्कृष्ट परिणाम

अहमदाबाद, छिंदवाड़ा, भोपाल, आगरा व सूरत गुरुकुल के १०वीं बोर्ड के तथा अहमदाबाद, सूरत, जयपुर व छिंदवाड़ा के १२वीं बोर्ड के परीक्षा-परिणाम १००% रहे।

अभिषेक चौहान,
सारस्वत्य मंत्र दीक्षित छात्र,
बाल संस्कार केन्द्र, सूरत
१०वीं गुज. बोर्ड – ९९.९६ PR

१०वीं व १२वीं राज्य बोर्ड परीक्षा-परिणाम

निधि साहू	रायपुर	९४.५%
त्रिषा साहू	रायपुर	९४.३%
रामपाल चौहान	खिलचीपुर	९०.८%
तनु यादव	रायपुर	८९.८%
डिम्पल अवधिया	रायपुर	८९%
आर्यन	लुधियाना	८३.७%
सोनल झिने	धुलिया	८१%
श्रीहरी लोखंडे	धुलिया	७९%
गरिमा पटेल	रायपुर	७८.३%
अभिषेक चौहान	खिलचीपुर	७८.४%
अमन	लुधियाना	७७.२%
राम लांडे	धुलिया	७७%
रूपाली साहू	रायपुर	१२वीं ८७.४%
गार्गी साहू	रायपुर	१२वीं ७६.२%

गुजरात बोर्ड परीक्षा-परिणाम

(PR = Percentile Rank)

१०वीं

गायत्री काटिया	राजकोट	९७.६४ PR
मयूर परमार	राजकोट	९५.७९ PR
भगीरथ कलमी	राजकोट	९५.६४ PR
नित्य पटेल	अहमदाबाद	९४.०७ PR
प्रथम कलाल	अहमदाबाद	९३.७५ PR
सत्यम महंत	अहमदाबाद	९३.४१ PR
किशन जीवानी	राजकोट	९३.२४ PR
प्रियांशी निनामा	सरकी लिमड़ी	९१.०६ PR
भाविक प्रजापति	सूरत	९१.०६ PR
संदीप घोडकिया	राजकोट	९०.८७ PR
कृष्ण मुनिया	अहमदाबाद	९०.२८ PR
परम पांडेय	सूरत	९०.०७ PR
जयकुमार सडात	दंतोड़	८९.६७ PR
सुरेश वडोदरिया	सूरत	८९.२६ PR
जयेश पुरोहित	सूरत	८९.०६ PR
अजय निषाद	अहमदाबाद	८७.५९ PR
सुप्रिया सडात	दंतोड़	८६.०८ PR
देवेन्द्र गुप्ता	सूरत	८५.८५ PR
मयूर भिलाला	सूरत	८४.९४ PR
दीपकुमार नायक	सूरत	८४.७० PR
प्रवीण असारी	सरकी लिमड़ी	८३.९९ PR
दिपिका तबियाड	दंतोड़	८३.५२ PR
धर्मेन्द्र डामोर	सरकी लिमड़ी	८०.५६ PR

१२वीं

जगदीश सुथार	अहमदाबाद	९४.७५ PR
जनक बंजारा	अहमदाबाद	८६.०७ PR
दलपत सुथार	अहमदाबाद	८५.८३ PR

१०वीं सी.बी.एस.ई. बोर्ड परीक्षा-परिणाम

युग वर्मा	छिंदवाड़ा	९६.५%
मोहित कुमार	छिंदवाड़ा	९६.२%
शौर्य तिवारी	छिंदवाड़ा	९५.२%
गौरी सिंह	छिंदवाड़ा	९५.२%
कृष्णा पाटीदार	इंदौर	९५%
रुद्राक्ष बच्छाव	धुलिया	९३%
पलक सूर्यवंशी	छिंदवाड़ा	९३%
तनिश सोनवणे	धुलिया	९३%
हर्ष पेठे	छिंदवाड़ा	९२.८%
व्योम शर्मा	जयपुर	९२.६%
मयूर थापा	छिंदवाड़ा	९२.४%
नमन साहू	छिंदवाड़ा	९१.६%
नित्या नामदेव	छिंदवाड़ा	९१.४%
भावेश कोचले	इंदौर	९०.८%
फलक साहू	छिंदवाड़ा	९०.८%
एलेश छाबरिया	छिंदवाड़ा	९०.६%
समर्थ यादव	छिंदवाड़ा	९०.४%
भूमिका चौहान	छिंदवाड़ा	९०.४%
लोहिताक्ष शर्मा	आगरा	८८.८०%
रिद्देश वाघमारे	भोपाल	८८%
प्रेम क्षीरसागर	धुलिया	८८%
सुमित भायदिया	इंदौर	८८%
सोहम गुप्ता	भोपाल	८७.२%
ऋतिका तातिया	धुलिया	८७%
जाह्नवी पाटील	धुलिया	८६%
भीमलेश साहू	भोपाल	८५%
अतुल बेहरा	इंदौर	८४.८%
राघव आहूजा	जयपुर	८४.६%
राघव पाठक	इंदौर	८४.४%
कनक	आगरा	८३.४%
नवीन बघेल	अलीगढ़	८३.२%
नारायण यादव	भोपाल	८३%
नम्रता यादव	भोपाल	७९.२%

१२वीं सी.बी.एस.ई. बोर्ड परीक्षा-परिणाम

कृति कुकरेजा	छिंदवाड़ा	९७%
योगेश	जयपुर	९३.२%
हरिओम चौबे	जयपुर	९२.४%
प्रशस्त जैन	भोपाल	८८.८%
नारायण शेंडगे	छिंदवाड़ा	८८.४%
दुर्गेश जोतवानी	छिंदवाड़ा	८७.४%
आस्था नोतानी	छिंदवाड़ा	८६.६%
मृत्युंजय सिंह	भोपाल	८६.२%
आभा ठाकरे	छिंदवाड़ा	८३.६%
कशिष मांझी	जयपुर	८३%
भरत मक्कर	इंदौर	८२.४%
चित्रसेन नवलकर	छिंदवाड़ा	८२.४%
कनिष्क मेवाड़ा	भोपाल	८२.२%
अनुश्री सोनी	भोपाल	८२.२%
आस्था पाटील	छिंदवाड़ा	८१.८%
मौली आचार्य	भोपाल	८०%
अनुष्का अग्रवाल	भोपाल	७९.४%
शिवनारायण	भोपाल	७९.२%
दिपांकर साहू	जयपुर	७७.६%
यश रमानी	भोपाल	७६.२%
जॉय पेसवानी	भोपाल	७५.८%
तेजल सिंह	भोपाल	७५.६%

आधुनिक शिक्षा व वैदिक ज्ञान का सुंदर सुमेल संत श्री आशारामजी गुरुकुल

ऋषि प्रसाद

हिन्दी, गुजराती, मराठी, ओड़िया, तेलुगु, कन्नड़, अंग्रेजी व बंगाली भाषाओं में प्रकाशित

वर्ष : ३५ अंक : २ (निरंतर अंक : ३९२)
प्रकाशन दिनांक : १ अगस्त २०२५
मूल्य : ₹ ७ आवधिकता : मासिक
पृष्ठ संख्या : ३६ (आवरण पृष्ठ सहित)
भाषा : हिन्दी | श्रावण-भाद्रपद, वि.सं. २०८२

स्वामी : संत श्री आशारामजी आश्रम
प्रकाशक : धर्मेश जगराम सिंह चौहान
मुद्रक : विवेक सिंह चौहान
प्रकाशन स्थल : संत श्री आशारामजी आश्रम, मोटेरा, संत श्री आशारामजी बापू आश्रम मार्ग, साबरमती, अहमदाबाद-३८०००५ (गुजरात)
मुद्रण स्थल : हरि ॐ मैन्युफेक्चरर्स, कुंजा मतरालियों, पौंटा साहिब, सिरमौर (हि.प्र.)-१७३०२५
सम्पादक : श्रीनिवास र. कुलकर्णी
सहसम्पादक : डॉ. प्रे.खो. मकवाणा
संरक्षक : श्री सुरेन्द्रनाथ भार्गव
पूर्व मुख्य न्यायाधीश, सिक्किम; पूर्व न्यायाधीश, राज. उच्च न्यायालय; पूर्व अध्यक्ष, मानवाधिकार आयोग, असम व मणिपुर

कृपया अपना सदस्यता शुल्क या अन्य किसी भी प्रकार की नकद राशि रजिस्टर्ड या साधारण डाक द्वारा न भेजें। इस माध्यम से कोई भी राशि गुम होने पर हमारी जिम्मेदारी नहीं रहेगी। **अपनी राशि मनीऑर्डर या डिमांड ड्राफ्ट ['हरि ओम मैन्युफेक्चरर्स' (Hari Om Manufactureres) के नाम अहमदाबाद में देय] द्वारा ही भेजने की कृपा करें।**

सम्पर्क पता : 'ऋषि प्रसाद', संत श्री आशारामजी आश्रम, संत श्री आशारामजी बापू आश्रम मार्ग, साबरमती, अहमदाबाद-३८०००५ (गुज.)
फोन : (०७९) २७५०५०१०-११, ६१२१०८८८
केवल 'ऋषि प्रसाद' पूछताछ हेतु : (०७९) ६१२१०७४२
९५१२०८१०८१ 'RishiPrasad'
ashramindia@ashram.org
www.ashram.org www.rishiprasad.org
www.asharamjibapu.org

सदस्यता शुल्क (डाक खर्च सहित) भारत में

अवधि	शुल्क
वार्षिक	₹ ७५
द्विवार्षिक	₹ १४०
पंचवार्षिक	₹ ३४०
आजीवन (१२ वर्ष)	₹ ७५०

विदेशों में

अवधि	सार्क देश	अन्य देश
वार्षिक	₹ ६००	US $ 20
द्विवार्षिक	₹ १२००	US $ 40
पंचवार्षिक	₹ ३०००	US $ 80
आजीवन (१२ वर्ष)	₹ ६०००	US $ 200

Subject to Ahmedabad Jurisdiction.

इस 'आत्मसाक्षात्कार विशेष' अंक में...

❖ **गुरु प्रसाद** ✻ जिन्होंने पकड़ी सद्गुरु की बात, वे हो गये ब्रह्म साक्षात्... ४
❖ **आंतर आलोक** ✻ ब्रह्म किसके लिए पास, किसके लिए दूर ? ५
❖ **अंतर्राष्ट्रीय समाचार** ✻ ...अंग्रेजों ने १३५ वर्षों में भारत से ५,५६,८०,३८० करोड़ लूटे ६
❖ **'बस उसी रात मैंने जीवन की परम सिद्धि प्राप्त कर ली'** ८
❖ **यह आघात हमारी संस्कृति, हमारे धर्म के ऊपर हुआ था** - श्री धनंजय देसाई, संस्थापक व राष्ट्रीय अध्यक्ष, हिन्दू राष्ट्र सेना ९
❖ **यह हिन्दू-आस्था केन्द्र ही निशाने पर क्यों ?** - सुश्री राजश्री चौधरीजी, राष्ट्रीय अध्यक्षा, अखिल भारत हिन्दू महासभा १०
❖ **जब मैं मिटा, परब्रह्म प्रकट हुआ : आत्मसाक्षात्कार की अमृतवेला** ११
❖ **संतवाणी** ✻ उन्हींको वह अंतरंग खजाना मिलता है - संत एकनाथजी १३
❖ **पूज्य बापूजी के जीवन-प्रसंग**
✻ ऐसी स्थिति में भी करते दूसरों की भलाई का चिंतन ! १४
✻ भीषण आपदा में भी पूर्ण सुरक्षित १४
❖ **गणेश चतुर्थी विशेष** ✻ भूलकर भी गणेश चतुर्थी का चाँद नहीं देखना १५
❖ **चन्द्र-दर्शन का कुप्रभाव मिटाने के लिए क्या करें ?** १६
❖ **आनेवालीं पुण्यदायी तिथियाँ व योग** १६
❖ **ताजा खबर** ✻ ...सर्वोच्च न्यायालय ने किया नेशनल टास्क फोर्स का गठन १७
✻ ४८ वर्ष तक निर्दोष को झेलनी पड़ी यातना... - रवीश राय ३२
❖ **विद्यार्थी संस्कार** ✻ अजर-अमर सौदा - स्वामी अखंडानंदजी १८
❖ **शास्त्र दर्पण** ✻ प्रह्लादजी का विवेक, वैराग्य व ज्ञान वर्धक उपदेश १९
❖ **उन वीर पुरुष की गाथा, जिन्होंने फल नहीं चाहा, केवल कर्तव्य निभाया** २०
❖ **समसामयिक** ✻ ...धर्मांतरित परिवार सनातन धर्म में लौटा २१
❖ **बड़ी खबर** ✻ अहमदाबाद विमान हादसे जैसी दुर्घटनाएँ... - मनोज मेहेर २२
❖ **जनहित समाचार** ✻ ...दिवंगतों की सद्गति हेतु आयोजन २३
❖ **पर्व विशेष** ✻ श्राद्ध आश्विन कृष्ण पक्ष में ही क्यों ? २४
✻ सुख-सम्पत्ति, आयु-आरोग्य प्रदायक तथा भगवत्प्राप्ति में सहायक व्रत ३३
❖ **संस्कृति विज्ञान** ✻ भारतीय संस्कृति के आधारभूत तथ्य २५
❖ **भजनामृत** ✻ आज आनंद मनायें हम - संत पथिकजी २६
❖ **ऐसा मंत्र-जप और शास्त्र-पठन प्रकट कर देगा परमात्म-प्रसाद** २७
❖ **जीवन को सँवारती व संकट मिटाती है...** - विजय बहादुर सिंह २८
❖ **स्वास्थ्य समाचार** ✻ शरद ऋतु में पथ्यकर व अपथ्यकर आहार-विहार ३०
✻ पित्तजन्य व्याधियाँ दूर करने के सरल उपाय ३१
❖ **यह आश्रम जिसने बनवाया है वही सँभालेगा** ३१
❖ **अनमोल कुंजियाँ** ✻ ...लक्ष्मी महालक्ष्मी होकर भोग व मोक्ष देनेवाली बनती है ३४

विभिन्न चैनलों पर पूज्य बापूजी का सत्संग

अनादि TV — रोज सुबह ६:३० व रात्रि ११ बजे टाटा प्ले (चैनल नं. ११६१), एयरटेल (चैनल नं. ३७९) व म.प्र., छ.ग., उ.खं. के विभिन्न केबल

DIGIANA DIVYA JYOTI — रोज रात्रि १० बजे म.प्र. में 'डिजियाना' केबल (चैनल नं. १०९)

सेवाकार्य भी

Asharamji Bapu | Asharamji Ashram | Mangalmay Digital

यूट्यूब चैनल्स

डाउनलोड करें : Rishi Prasad App (ऋषि प्रसाद की ऑनलाइन सदस्यता हेतु) Rishi Darshan App (ऋषि दर्शन विडियो मैगजीन की सदस्यता हेतु) एवं Mangalmay Digital App

विश्व आर्थिक मंच की बैठक में जारी रिपोर्ट में हुआ खुलासा :

अंग्रेजों ने १३५ वर्षों में भारत से ५,५६,८०,३८० करोड़ लूटे

ब्रिटिश आर्थिक इतिहासकार एंगस मैडिसन अपनी साहित्यिक कृति में लिखते हैं : 'भारत विश्व का सबसे समृद्ध देश था और १७वीं शताब्दी तक उसके पास विश्व की सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था थी ।' विचारणीय है कि अपनी अत्यंत सशक्त व स्वावलम्बी अर्थव्यवस्था के बल पर समूचे विश्व में 'सोने की चिड़िया' कहलानेवाला भारत आर्थिक दृष्टि से उन सभ्यताओं से पीछे कैसे चला गया जो एक समय अपनी बुनियादी आवश्यकताओं के लिए भारत के संसाधनों पर निर्भर रहती थीं ? इस प्रश्न के उत्तर में विश्व-इतिहास की सबसे क्रूर और दर्दनाक दास्तान छिपी है । वह दास्तान जिससे उजागर होता है एक कड़वा सत्य कि कैसे १२०० से अधिक वर्षों तक विदेशी आक्रांताओं द्वारा भारत को योजनाबद्ध तरीके से लूटा गया तथा भारत की अस्मिता, आत्मनिर्भरता और आर्थिक ढाँचे को तहस-नहस किया गया ।

वैश्विक संगठन 'ऑक्सफैम इंटरनेशनल' ने हाल ही में विश्व आर्थिक मंच(World Economic Forum) की इस वर्ष की बैठक में एक रिपोर्ट जारी की, जिसमें उल्लेख किया गया कि 'वर्ष १७६५ से १९०० के बीच यू.के. द्वारा भारत से जो ६४.८२ खरब डॉलर अर्थात् ५,५६,८०,३८० करोड़ रुपये (आज के मूल्य के अनुसार) की सम्पत्ति लूटी गयी उसमें से ३३.८ खरब डॉलर केवल शीर्ष १०% अमीर लोगों के पास गयी । यह लंदन को ५० पाउंड के नोटों से लगभग चार बार ढकने में पर्याप्त है । वर्ष १७५० में भारतीय उपमहाद्वीप दुनिया के औद्योगिक उत्पादन का लगभग २५% हिस्सा उत्पन्न करता था लेकिन वर्ष १९०० तक यह आँकड़ा अत्यंत तेजी से गिरते-गिरते मात्र २% रह गया ।'

क्या था अंग्रेजों का भारत में आने का उद्देश्य ?

जिस समय भारत को मुगलों द्वारा लूटा जा रहा था उस दौरान १५वीं सदी में कैथोलिक पादरियों ने कुछ आदेश-पत्र जारी किये, जिनमें औपनिवेशवाद (colonialism) को औचित्यपूर्ण बताकर यूरोपीय ताकतों को गैर-ईसाई लोगों की सम्पत्ति हड़पने, उन्हें ईसाइयत में धर्मांतरित करने तथा चर्च के विस्तार हेतु उनकी भूमि हथियाने के लिए अधिकृत किया गया । और १६०८ में इसी उद्देश्य से ईस्ट इंडिया कम्पनी ने व्यापार के बहाने भारत में अपने पाँव जमाये ।

अमेरिका के प्रसिद्ध दार्शनिक एवं इतिहासकार विल डुरांट 'द केस फोर इंडिया' नामक पुस्तक में लिखते हैं : 'इंग्लैंड ने १५० वर्षों तक जानबूझ के और सोची-समझी नीति के तहत भारत को निचोड़ा यह जानकर मैं आश्चर्य और आक्रोश से भर गया । मुझे यह अनुभव होने लगा कि मैं मानव-इतिहास के सबसे बड़े अपराध का सामना कर बैठा । मुझे ज्ञात है कि बंदूकों और रक्तपात के सामने शब्द (न्याय और मानवता

जब मैं मिटा, परब्रह्म प्रकट हुआ : आत्मसाक्षात्कार की अमृतवेला

२३ सितम्बर : पूज्य बापूजी के ६१वें आत्मसाक्षात्कार दिवस पर विशेष

२३ सितम्बर को पूज्य बापूजी का ६१वाँ आत्मसाक्षात्कार दिवस है । यह दिवस समस्त मनुष्य-जाति के लिए प्रेरणास्रोत है । यह हमें ईश्वरप्राप्ति के मार्ग पर चलने की ओर प्रोत्साहित करता है । पूज्य बापूजी की प्रेरणा से देश-विदेश के संत श्री आशारामजी आश्रमों एवं समितियों द्वारा इस दिन सत्संग-कार्यक्रम, भगवन्नाम संकीर्तन यात्राएँ, सत्साहित्य-वितरण, गरीबों व जरूरतमंदों में भंडारे, अस्पतालों में फल-वितरण, अनाथालयों और कारागृहों में प्रसाद-वितरण आदि सेवाएँ की जाती हैं ।

आत्मसाक्षात्कार की सर्वोच्च उपलब्धि के बारे में पूज्य बापूजी के सत्संग-वचनामृत में आता है :

ब्राह्मी स्थिति का बयान नहीं हो सकता

हम गुरु की खोज करते-कराते नैनीताल पहुँचे । नैनीताल में ४० दिन बीत गये फिर मेरे गुरुदेव आये । कुछ दिन रहे फिर गुरुदेव ने आज्ञा दी : ''जाओ, घर पर जा के ध्यान-भजन करना ।''

गुरुआज्ञा मानकर घर आये । घर के राजसी वातावरण में कहाँ ध्यान-भजन होवे ! १३ दिन में ही घर से चले गये । नर्मदा-किनारे ४० दिन का अनुष्ठान किया ।

गुरुदेव नैनीताल से मुंबई के पास वज्रेश्वरी के एकांत जंगल में आकर किसी शांत जगह में ठहरे थे । मैंने वहाँ का पता पा लिया था । ४० दिन का अनुष्ठान पूरा होते ही आसोज सुद एकम (आश्विन शुक्ल प्रतिपदा) को ट्रेन में बैठे । दूज (द्वितीया) के प्रभात को मुंबई उतरे । फिर पूछते-पाछते ११ बजे वज्रेश्वरी पहुँच गये । बापूजी (पूज्यपाद भगवत्पाद साँईं श्री लीलाशाहजी महाराज) ने देखा कि 'इतना भगाया, घर में रहने को भेजा फिर भी...'

अनुष्ठान करने से तड़प बढ़ गयी थी । हमारा तो दिल तड़प रहा था कि कब मिलेंगे ? जैसे प्यासे व्यक्ति से कोई भी बात करे तो बात करते हुए भी वह पानी की तरफ ही देखेगा, वैसी तड़प उस समय भगवान की कृपा से हुई । मैंने कहा : ''और कुछ नहीं चाहिए, बस आपकी कृपा...''

बापू ने कहा : ''भगवान भला करेगा, सब ठीक करेगा ।''

मेरे पास एक झोली थी । गुरुदेव ने पूछा : ''यह सब क्या है ?''

मैंने कहा : ''साँईं ! मैं अपने हाथ से ही भोजन बनाता हूँ, मूँग उबालकर खाता हूँ । इसमें प्राइमस स्टोव है और थोड़ा-सा सामान है ।''

जैसे साधु बाबाओं का झोली-झंडा होता है वैसे ही था लेकिन थोड़ा बड़ा था क्योंकि राशन-वाशन भी साथ में रखते थे । अपने सात्त्विक विचार बरकरार रहें इसलिए दूसरे किसीके हाथ का खाते नहीं थे ।

१ बजा, खाना बनाया । सब्जी बाबाजी के रसोइये ने दी । सब्जी-वब्जी उबाल के खायी । थके थे तो २ बजे थोड़ा झोंका-वोंका खाया । ढाई

ऐसी स्थिति में भी करते दूसरों की भलाई का चिंतन !

(गतांक के **'कैसे प्रेरक, फलदाता व हितैषी हैं मेरे गुरुदेव !'** का शेष)

कंदरोड़ी (हि.प्र.) निवासी श्री जगन्नाथ शर्मा आगे बताते हैं :

दूसरी बार जब बापूजी से दूरभाष के माध्यम से बात हुई उस समय बापूजी का स्वास्थ्य बहुत ज्यादा खराब था। उस स्थिति में भी पूज्यश्री मुझसे हमारी समिति की सेवाओं के बारे में पूछ रहे थे। मैंने कीर्तन-मंडली की सेवा के बारे में बताया तो बोले : ''कहाँ-कहाँ कीर्तन करने जाते हो ? कौन-कौन-सा पाठ करते हो ?''

मैंने बताया : ''गुरुदेव ! हिमाचल प्रदेश, जम्मू व पंजाब में जगह-जगह जाकर भगवन्नाम-कीर्तन और श्री आशारामायणजी★ का पाठ करते हैं।''

पूज्य बापूजी के जीवन-प्रसंग

गुरुदेव बोले : ''जहाँ भी पाठ करते हो वहाँ **'हे प्रभु ! आनंददाता !! ज्ञान हमको दीजिये ।...'** इस प्रार्थना★★ का पाठ तो पक्का करवाना, सबको इसका पर्चा भी देना। इसमें ऐसी शक्ति है कि जिसके घर में इसका पाठ होगा वहाँ सब बढ़िया हो जायेगा।''

स्वास्थ्य की अत्यंत नाजुक अवस्था में भी दूसरों की भलाई का चिंतन तो बापूजी जैसे महापुरुष ही कर सकते हैं ! गुरुदेव की करुणा देख मेरा हृदय भावविभोर हो गया।

★ आश्रमों में सत्साहित्य सेवा केन्द्रों पर उपलब्ध ।

★★ पूरी प्रार्थना हेतु स्कैन करें QR कोड अथवा जायें इस लिंक पर : bit.ly/HePrabhuAnanddata

भीषण आपदा में भी पूर्ण सुरक्षित

अहमदाबाद आश्रम में सेवारत राजकुमार महतो, जिन्हें वर्ष १९९२ से पूज्य बापूजी के सत्संग-सान्निध्य का लाभ मिल रहा है, वे बापूजी के जीवन का एक प्रसंग बताते हुए कहते हैं : ''जनवरी २००१ की बात है। पूज्य बापूजी शांति वाटिका में ठहरे थे। २६ जनवरी को सुबह की संध्या में पूज्यश्री ने सभी आश्रमवासी भाई-बहनों के लिए वाटिका आने का संदेश भिजवाया। बहनें नारायण वाटिका गयीं और भाई शांति वाटिका गये।

हम सभी भाई वाटिका के सत्संग-मंडप में बैठकर ध्यान, जप का नित्य नियम करते हुए गुरुदेव की प्रतीक्षा करने लगे। मैं आँखें बंद करके जप कर रहा था। पौने नौ बजे के आसपास अचानक मेरा शरीर डोलने लगा। मुझे लगा कि शायद ऐसा कुंडलिनी शक्ति की जागृति से पूर्व होनेवालीं क्रियाओं के कारण हो रहा होगा परंतु कम्पन बढ़ने लगा तो मेरी आँखें खुल गयीं। मैंने देखा कि धरतीसहित सब कुछ हिल रहा है, भयंकर भूकम्प आने से कोई यहाँ भाग रहा है तो कोई वहाँ।

भूकम्प के झटके बंद हुए तो बापूजी आये और बोले : ''मैं ध्यान में बैठा था। यह भूकम्प नहीं, लघु प्रलय था। भूकम्प का प्रभाव हमने कम कर दिया, नहीं तो अहमदाबाद में भी भारी तबाही हो जाती। जो अपने साधक हैं उनको

विद्यार्थी संस्कार

अजर-अमर सौदा

- स्वामी अखंडानंदजी

भिक्षु शंकरानंदजी अहमदाबाद के पास किसी छोटे-से गाँव में ब्रह्मभट्ट वंश में पैदा हुए थे । वे बाल्यावस्था से ही सत्यनिष्ठ थे । एक बार जो बात कह देते उस पर दृढ़ रहते और अपनी प्रतिज्ञा का पालन करते । यह बात उनके माता-पिता, सगे-संबंधी सब जानते थे । जो सत्यप्रेमी नहीं होगा वह सत्य (सत्यस्वरूप परमात्मा) के साक्षात्कार के लिए तपस्या भी नहीं करेगा कारण कि सत्य के ज्ञान के लिए तपस्या, विवेक-वैराग्य, जिज्ञासा आदि साधनों की आवश्यकता होती है । भिक्षुजी की बुद्धि में उस समय जो बात सत्यरूप से निश्चय हो जाती उसके लिए वे बड़े-से-बड़ा त्याग करने को प्रस्तुत रहते ।

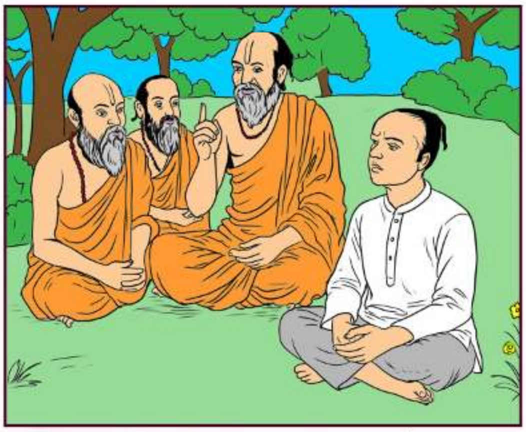

होनहार बिरवान के होत चिकने पात ।

किसी समय भिक्षुजी के पिताजी ने कहा : ''बेटा ! अपनी दुकान के लिए अमुक वस्तु की आवश्यकता है, तुम बड़े नगर से ले आओ ।''

२५० रुपये दे दिये गये । भिक्षुजी जब अपने घर से जा रहे थे तो मार्ग में साधुओं की एक मंडली मिली । वह बगीचे में ठहरी हुई थी । वेदांत की चर्चा हो रही थी । भिक्षुजी को वेदांत के **'सत्यं ज्ञानमनन्तं ब्रह्म'** की चर्चा में अत्यंत रुचि हुई और घंटों तक ध्यान से श्रवण करते रहे। सत्संग-चर्चा के अंत में एक महात्मा ने प्रबंधक को बुलाया और पूछा : ''आज साधुओं के भोजन का क्या प्रबंध है ?''

प्रबंधक ने बताया कि क्या-क्या वस्तुएँ वहाँ हैं और क्या नहीं हैं । भिक्षुजी ने अपने पिता के २५० रुपये उन्हें दे दिये और खाली हाथ घर लौट आये ।

पिता ने पूछा : ''सौदा ले आये ?''

भिक्षुजी ने कहा : ''पिताजी ! आपने तो संसारी नाशवान सौदा मँगाया था, मैं तो उन रुपयों से परमार्थ का सौदा ले आया हूँ जो अजर-अमर है ।''

उनके दृढ़ निश्चय से परिचित होने के कारण पिताजी ने कुछ भी नहीं कहा ।

भिक्षुजी के मन में प्रज्ञानघन★, अद्वितीय ब्रह्म का चिंतन चलने लगा ।

★ प्रज्ञान अर्थात् ज्ञाता-ज्ञान-ज्ञेय की त्रिपुटी से रहित ज्ञान या ज्ञानमात्र आत्मा । ❒

जीवन का लक्ष्य - पूज्य बापूजी

एक आत्मज्ञान पाना ही जीवन का आदर्श होना चाहिए, लक्ष्य होना चाहिए । जिसके जीवन का कोई लक्ष्य नहीं है, आदर्श नहीं है उसका जीवन घोर अंधकार में बिखर जाता है । जिसके जीवन में आत्मज्ञान पाने का लक्ष्य है, आदर्श है वह चाहे हजार गलतियाँ कर ले फिर भी कभी-न-कभी उस लक्ष्य को पा लेगा । जिसके जीवन में आत्मज्ञान पाने का लक्ष्य नहीं वह कपोलकल्पित लक्ष्य को आदर्श बनाता रहेगा, बिखरता रहेगा और चौरासी के चक्कर से छूट नहीं पायेगा । ❒

झाबुआ की इस युवती की स्वधर्मनिष्ठा से धर्मांतरित परिवार सनातन धर्म में लौटा

समसामयिक
Current affairs

हाल ही में मध्य प्रदेश के झाबुआ जिले की युवती संगीता भाबर का हिन्दू धर्म के विधि-विधान के अनुरूप विवाह हुआ लेकिन विवाह के कुछ घंटों बाद उसे पता चला कि उसके ससुरालवाले पूर्व में ईसाई धर्म अपना चुके हैं और उन्होंने जानबूझकर यह बात छिपायी थी। संगीता ने अपने धर्म के प्रति एकनिष्ठा का परिचय देते हुए साफ कर दिया कि 'वह सनातन धर्म को माननेवालों के साथ ही रहेगी। यदि उसके ससुरालवाले पुनः अपने मूल धर्म में नहीं लौटते तो वह उस घर में नहीं रहेगी।'

शादी के अगले दिन संगीता अपने माता-पिता के यहाँ लौट आयी। उसकी स्वधर्मनिष्ठा का ससुरालवालों पर ऐसा प्रभाव पड़ा कि वे सनातन धर्म से जुड़ने को तैयार हो गये और उसे फिर से घर ले आये।

यह घटना हिन्दू समाज के उन युवक-युवतियों के लिए एक जीवंत और स्पष्ट संदेश है जो विवाह के नाम पर अपने धर्म, अपनी जड़ों का त्याग कर देते हैं। अंतर्धार्मिक विवाहों में अधिकांशतः ऐसा देखा जाता है कि वर और वधू में से जो हिन्दू होता है उसे अपना धर्म बदलना पड़ता है। आधुनिकता से प्रभावित जो हिन्दू इन विवाहों को उचित ठहराते हैं उन्हें इस बात का विचार करना चाहिए कि क्या ऐसे विवाहों से उत्पन्न संतान हमारी संस्कृति के महापुरुषों के सद्ज्ञान व सनातन धर्म के उच्च आदर्शों, जीवन-मूल्यों से सम्पन्न हो पायेगी? इन मूल्यों से रहित नवपीढ़ी से परिवार, समाज व देश का भविष्य किस ओर जायेगा? हिन्दुत्व के बीज के बिना समाज की सर्वांगीण उन्नति का वृक्ष कैसे विकसित होगा?

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सरसंघचालक श्री मोहन भागवत कहते हैं : ''मतांतरण कैसे होता है? अपने देश के लड़के-लड़कियाँ दूसरे मतों में कैसे चले जाते हैं? छोटे-छोटे स्वार्थों के कारण, विवाह करने के लिए। ऐसा करनेवाले गलत हैं वह बात अलग है परंतु हमारे बच्चों को हम ही तैयार नहीं करते। हमको बच्चों को घर में अपने-आपके प्रति, अपने धर्म के प्रति गौरव और अपनी पूजन-परम्पराओं के प्रति आदर के संस्कार देने पड़ेंगे।''

पूज्य बापूजी के सत्संग में आता है : ''सनातन धर्म की व्यवस्था, उपदेश, ज्ञान बहुत बढ़िया है लेकिन उसका ठीक से प्रचार-प्रसार करने में हम लोग खुद ही लापरवाह हैं। कोई हिन्दू लड़का किसी मुसलमान लड़की से लव मैरेज (प्रेम-विवाह) करेगा तो मुसलमान लड़की उसको मुसलमान बनायेगी फिर शादी करेगी। तो हमारा हिन्दू लड़का मुसलमान हो गया। और कोई हिन्दू लड़की मुसलमान लड़के से मिली-जुली तो वह मुसलमान लड़का भी हिन्दू लड़की को पहले मुसलमान बना देगा फिर शादी करेगा। तो हमारी हिन्दू लड़की मुसलमान हो गयी।

हमारे हिन्दू बच्चों में, हिन्दू माँ-बापों में अपने

श्राद्ध आश्विन कृष्ण पक्ष में ही क्यों ?

पर्व विशेष

७ से २१ सितम्बर तक श्राद्ध पक्ष (महालय) है । इसकी महत्ता-आवश्यकता तथा इससे संबंधित एक शास्त्रीय कथा पूज्य बापूजी के सत्संग में आती है :

''श्रद्धया यत्क्रियते तत् श्राद्धम् ।

'श्रद्धा से जो पूर्वजों के लिए किया जाय उसको 'श्राद्ध' कहते हैं ।'

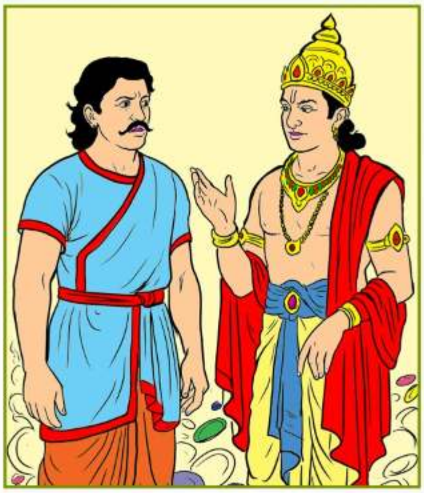

गरुड़ पुराण (धर्म कांड, प्रेत कल्प : १०.५७-५८) में आता है कि 'समयानुसार श्राद्ध करने से कुल में कोई दुःखी नहीं रहता। पितरों की पूजा करके मनुष्य आयु, पुत्र, यश, स्वर्ग, कीर्ति, पुष्टि, बल, श्री, पशुधन, सुख, धन और धान्य प्राप्त करता है ।'

श्राद्ध का समय आश्विन कृष्ण पक्ष में ही क्यों ? दूसरे दिन क्यों नहीं निश्चित हुए ? शास्त्र में आता है कि 'आश्विन मास के पितृ पक्ष में पितरों को आशा लगी रहती है कि हमारे पुत्र-पौत्र आदि हमें पिंडदान प्रदान कर संतुष्ट करेंगे ।' यही आशा ले के वे श्राद्ध पक्ष में अंतवाहक शरीर से अपने परिवार के यहाँ जाते हैं ।

श्राद्ध-संबंधी एक कथा भी है । महाभारत के युद्ध में दानवीर कर्ण देह छोड़कर ऊर्ध्वलोक में गये और वीरोचित गति को प्राप्त हुए । मृत्युलोक में वे दान करने के लिए प्रसिद्ध थे ।

कर्ण ने दान किया था सोने, हीरे-जवाहरात का परंतु अन्नदान की उपेक्षा की थी । मर के स्वर्गलोक गये तो वहाँ सोने, जवाहरात के बीच रहने को मिला लेकिन खाने को कुछ नहीं ।

कर्ण इन्द्र से बोले : ''भगवन् ! खाने की व्यवस्था... ?''

इन्द्र बोले : ''तूने अपने पूर्वजों के नाम पर अन्नदान किया ही नहीं । सोना, हीरे-जवाहरात दान किये थे, वे ही अनंत गुना होकर तेरे को मिले हैं । अब बैठ इनके बीच ।''

''भगवन् ! मेरे को पता नहीं था । मैंने जानबूझ के अवहेलना नहीं की थी, अनजाने में अवहेलना हो गयी । कृपा कीजिये, कुछ उपाय बताइये ।''

''यह एक पक्ष (१५-१६ दिन) तुझे देता हूँ, मृत्युलोक में फिर से जा और जो कुछ तुझे करना है कर ।''

मृत्युलोक में आये । अनाथ-गरीबों को दया करके भोजन कराया और साधु-संतों व ब्राह्मणों को विनती करके भोजन कराया, अपने पूर्वजों का तर्पण किया । दया और दान में फर्क है । लूले-लँगड़े, अनाथ और जो कृपा के पात्र होते हैं उन पर दया की जाती है और जो कृपा करते हैं, जो विद्वान हैं, पवित्र हैं, साधु-ब्राह्मण हैं उनके चरणों में दान किया जाता है । तो कर्ण ने अन्न का दान किया, दया की और कई लोगों को तृप्त किया ।

एक पक्ष तृप्त करके जब कर्ण स्वर्गलोक पहुँचे तो इन्द्र ने कहा : ''अब तू अनंत गुना भोग इधर भोग ।'' इस प्रकार कर्ण पितृ ऋण से मुक्त हुए ।

कर्ण बोले : ''महाराज ! और कोई मेरे जैसी गलती कर जाय तो... ?''

इन्द्र : ''उसके पितरों ने कुछ किया-न किया हो परंतु इस आश्विन मास के कृष्ण पक्ष में जो श्राद्ध करेगा उसके पितरों को तृप्ति मिलेगी ।''

जीवन को सँवारती व संकट मिटाती है ऋषि प्रसाद सेवा

मुझे पिछले २३ वर्षों से ऋषि प्रसाद की सेवा का सौभाग्य मिल रहा है । पिछले वर्ष मेरे ३५५० सदस्य थे, गुरुकृपा से अभी ५३२१ सदस्य हैं । ७२ वर्ष की उम्र में मैं घर-घर जाकर हर महीने ऋषि प्रसाद की १५०० प्रतियाँ स्वयं बाँटता हूँ । गुरुदेव की प्रेरणा से मैं दूसरे लोगों को भी इस सेवा से जोड़ता हूँ ।

सेवा संजीवनी

ऋषि प्रसाद की सेवा से मेरे जीवन की दिशा व दशा तो बदली ही, मैंने जिनको भी इस सेवा से जोड़ा उनको भी अद्‌भुत लाभ हुए।

ऋषि प्रसाद की सेवा से मेरे जीवन की दिशा व दशा तो बदली ही, मैंने जिनको भी इस सेवा से जोड़ा उनको भी अद्‌भुत लाभ हुए ।

नशे की लत छूट गयी

एक ऑटो चलानेवाले भाई (मोनू सक्सेना) शराब, सिगरेट, गाँजा, भाँग आदि का बहुत नशा करते थे । मैंने उनसे कहा : ''भैया ! तुम्हारी नशे की लत को देखकर मुझे लगता है कि तुम अपने माता-पिता से पहले ही संसार से चले जाओगे । अपने जीवन को सुधारो ।''

वे बोले : ''काकाजी ! नशा छोड़ने की कोशिश करता हूँ पर छूटता नहीं । मेरे पिताजी ने मुझे २ बार नशामुक्ति केन्द्र में भर्ती कराया लेकिन मैं दोनों बार भाग आया । तीसरी बार लेकर गये तो नशामुक्ति केन्द्र वालों ने हाथ जोड़ लिये ।''

''अच्छा, एक काम करो । बापूजी की तस्वीर के आगे रोज ५ रुपये चढ़ाया करो । जो पैसा इकट्ठा हो उससे एकादशी के दिन ऋषि प्रसाद के सदस्य बना दिया करो ।''

उन्होंने वैसा चालू कर दिया । जब पहली बार उन्होंने मुझे सेवाराशि दी तो मैंने पूछा : ''नशे की आदत में कुछ फर्क पड़ा ?''

''हाँ काकाजी ! कमाल हो गया, मेरी नशे की आदत छूट गयी । पर कभी-कभी मन भटकता है ।''

मैंने उन्हें कुछ सावधानी बतायी और कहा कि ''आप दृढ़ता रखना, बापूजी की कृपा से आपकी लत छूट जायेगी ।'' कुछ समय बाद पूछा तो उन्होंने बताया कि ''अब नशा करने की कभी इच्छा नहीं होती ।''

वे सेवा हेतु रोज १० रुपये चढ़ाते हैं ।

सेवा व प्रार्थना का चमत्कार

मेरी एक परिचित बहनजी [गीता देवी (उम्र ७२ साल)] को कैंसर था । २०२३ में उन्होंने मुझसे कहा : ''जाँच कराने में बहुत पैसे खर्च हो चुके हैं, डॉक्टर ऑपरेशन करवाने को बोल रहे हैं । मैं क्या करूँ?''

मैंने कहा : ''बहनजी ! परिस्थिति विषम है पर संकल्प करो कि 'बापूजी ! मैं ऋषि प्रसाद के २५ सदस्य बनाऊँगी । इस समय मैं परेशानी में हूँ, मेरे स्वास्थ्य की रक्षा कीजिये ।' मैं भी गुरुदेव से प्रार्थना करूँगा ।''

उन्होंने वैसा किया ।

जून २०२५ में मैंने उनसे पूछा : ''कैसा स्वास्थ्य है ?''

वे बोलीं : ''ठीक है ।''

''ऑपरेशन करवाया ?''

''मैं ठीक हूँ तो ऑपरेशन क्यों कराऊँ ?

घर-घर कैलेंडर 'दिव्य दर्शन' अभियान (वर्ष २०२६)

साधकगण एवं युवा सेवा संघ के भाई इस अभियान के अंतर्गत साधकों, मित्रों, रिश्तेदारों एवं परिचितों के घर जाकर उन्हें दीवाल दिनदर्शिका (वॉल कैलेंडर), पॉकेट कैलेंडर व डायरी पहुँचाने की सेवा का लाभ लें।

प्राप्ति : संत श्री आशारामजी आश्रमों में सत्साहित्य सेवा केन्द्रों पर तथा श्री योग वेदांत सेवा समितियों एवं साधक-परिवारों के सेवा केन्द्रों पर। ऑनलाइन ऑर्डर हेतु : **www.ashramestore.com/calendar** सम्पर्क : (०७९) ६१२१०७३२ (साहित्य विभाग), ६१२१०७६१ (युवा सेवा संघ मुख्यालय)

विशेष : प्रति कैलेंडर मूल्य ₹ १५ मात्र। २ कैलेंडर लेने पर ₹ ५ की आकर्षक छूट के साथ आपको देने हैं मात्र ₹ २५ !
२५० या इससे ज्यादा कैलेंडर का ऑर्डर देने पर आप अपना नाम एवं फर्म, दुकान आदि का नाम-पता छपवा सकते हैं।
२५० से ९९९ तक छपवाने पर मूल्य ₹ १३ तथा १००० या उससे अधिक छपवाने पर मूल्य ₹ १२.५० प्रति कैलेंडर रहेगा।

पान-गुलाब-आँवला शरबत

आँवला, गुलाब-जल, पान के पत्ते, सौंफ, इलायची युक्त यह शीतल, मधुर शरबत स्वास्थ्यकर होने के साथ ही सुगंधित और स्वादिष्ट भी है। यह भूख और पाचनशक्ति बढ़ाता है, पित्त और वायु का शमन करता है। आंतरिक गर्मी, जलन, प्यास की अधिकता को दूर कर शक्ति और स्फूर्ति देता है।

₹ ९५
९४० ग्राम

आँवला-अदरक शरबत

यह यकृत (liver) व आँतों की कार्यक्षमता, चेहरे की कांति, रोगप्रतिकारक शक्ति (immunity) व भूख बढ़ाता है। इससे पाचन ठीक से होता है एवं शरीर पुष्ट व बलवान बनता है। यह अरुचि, अम्लपित्त (hyperacidity), पेट फूलना, कब्ज आदि अनेक तकलीफों में एवं हृदय, मस्तिष्क व बालों हेतु लाभदायी है।

₹ ९५
८४० ग्राम

होमियो पॉवर केअर

देशी गाय के पवित्र पीयूष से निर्मित इन गोलियों में हैं ऐसे पोषक तत्त्व, जो देते हैं आपके शरीर के हर हिस्से को उचित पोषण, उत्तम स्वास्थ्य और ढेर सारी रोगप्रतिकारक शक्ति !

₹ १२०
९० गोलियाँ

कोष्ठशुद्धि कल्प
पेट की गोली

यह उत्तम कृमिनाशक है। ५०% से अधिक बच्चों के पेट में कृमि पाये जाते हैं अतः बच्चों हेतु कोष्ठशुद्धि कल्प विशेष हितकर है। कुछ दिन तक इसका नियमित सेवन करने से पेट के कीड़े नष्ट होकर कृमिजन्य शय्यामूत्र, मुँह से लार टपकना, भूख न लगना, मुँह पर सफेद दाग, तुतलाना, कमजोरी, बच्चों का वजन न बढ़ना आदि लक्षण दूर हो जाते हैं।

₹ ७०
५० ग्राम

संजीवनी टेबलेट

यह गोली व्यक्ति को शक्तिशाली, ओजस्वी, तेजस्वी व मेधावी बनाती है। इसमें सभी रोगों का प्रतिकार करने तथा उन्हें नष्ट करने की प्रचंड क्षमता है। यह श्रेष्ठ रसायन-द्रव्यों से सम्पन्न होने से सप्तधातुओं व पंचज्ञानेन्द्रियों को दृढ़ बनाकर वृद्धावस्था को दूर रखती है। हृदय, मस्तिष्क व पाचन-संस्थान को विशेष बल प्रदान करती है। इसमें तुलसी-बीज होने से सभी उम्रवालों के लिए यह बहुत लाभदायी है।

₹ ६०
१०० ग्राम

उपरोक्त सामग्री संत श्री आशारामजी आश्रमों में सत्साहित्य सेवा केन्द्रों से तथा समितियों से प्राप्त हो सकती है। अन्य उत्पादों व उनके लाभ आदि की विस्तृत जानकारी के लिए एवं घर बैठे रजिस्टर्ड पोस्ट द्वारा सामग्री-प्राप्ति हेतु गूगल प्ले स्टोर से डाउनलोड करें : "Ashram eStore" App या विजिट करें : www.ashramestore.com या सम्पर्क करें : ९४२८८५७८२०. ई-मेल : contact@ashramestore.com

गुरुपूर्णिमा पर कृतज्ञता व्यक्त करने आश्रमों में उमड़ा गुरुभक्तों का सागर

RNI No. 48873/91
RNP. No. GAMC 1132/2024-26
(Issued by SSPOs Ahd, valid upto 31-12-2026)
Licence to Post without Pre-payment.
WPP No. 08/24-26
(Issued by CPMG UK. valid upto 31-12-2026)
Posting at Dehradun G.P.O. between
1st to 17th of every month.
Date of Publication: 1st Aug 2025

अहमदाबाद

गोंदिया (महा.)

विदेशों में

लखनऊ

भोपाल

बीरगंज (नेपाल)

न्यूजर्सी (यू.एस.ए.)

राजनांदगाँव (छ.ग.)

वाराणसी

गोधरा (गुज.)

लंदन (यू.के.)

हैदराबाद

करोलबाग-दिल्ली

केसरापल्ली (ओड़िशा)

सिडनी (ऑस्ट्रेलिया)

श्योपुर (म.प्र.)

नागपुर

राजपुरा (पंजाब)

टोरंटो (कनाडा)

जयपटना (ओड़िशा)

अजमेर (राज.)

मोतिहारी (बिहार)

कैलिफोर्निया (यू.एस.ए.)

ऋषि प्रसाद का आदर-पूजन करके मनायी ऋषि प्रसाद जयंती

बेलौदी, जि. दुर्ग (छ.ग.)

बेंगलुरु

लुधियाना

जम्मू

ऋषि प्रसाद सेवा का संकल्प

वापी (गुज.)

प्रयागराज

चंडीगढ़

पटना

स्थानाभाव के कारण सभी तस्वीरें नहीं दे पा रहे हैं। अन्य अनेक तस्वीरों हेतु वेबसाइट www.ashram.org/seva देखें।
आश्रम, समितियाँ एवं साधक-परिवार अपने सेवाकार्यों की तस्वीरें sewa@ashram.org पर ई-मेल करें।

आश्रम के मासिक प्रकाशन की सदस्यता हेतु स्कैन करें : Rishi Prasad ऋषि प्रसाद Rishi Darshan ऋषि दर्शन Lok Kalyan Setu लोक कल्याण सेतु

स्वामी : संत श्री आशारामजी आश्रम **प्रकाशक** : धर्मेश जगराम सिंह चौहान **मुद्रक** : विवेक सिंह चौहान **प्रकाशन-स्थल** : संत श्री आशारामजी आश्रम, मोटेरा, संत श्री आशारामजी बापू आश्रम मार्ग, साबरमती, अहमदाबाद-३८०००५ (गुजरात) **मुद्रण-स्थल** : हरि ॐ मैन्युफेक्चरर्स, कुंजा मतरालियों, पौंटा साहिब, सिरमौर (हि.प्र.)-१७३०२५ **सम्पादक** : श्रीनिवास र. कुलकर्णी